श्रीमद् भगवद्-गीता की पाठालोचना

वसन्तकुमार म.भट्ट

भूमिकाः-

महाभारत के भीष्म पर्व में अध्याय 25 से 42 पर्यन्त भगवद्-गीता को रखी गई है । यह सुविदित है कि भगवद्-गीता को एक उपनिषद् का दरजा दिया गया है, क्योंकि इसमें कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन और उनके सारथि श्रीकृष्ण के बीच में शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता को लेकर दार्शनिक संवाद है । इस ग्रन्थ में 18 अध्याय है, जिनमें 700 श्लोकों का विस्तार है । ये श्लोक बहुशः अनुष्टुप् छन्द में लिखे गये हैं, और कुत्रचित् उपजाति इत्यादि छन्दों में भी अमुक श्लोकों की रचना मिलती है । इस ग्रन्थ का अवतार किस परिस्थिति में हुआ था उसकी ओर गौर करने से मालूम होता है कि कुरुक्षेत्र के मेदान में कौरवों तथा पाण्डवों की सेनाएं युद्ध करने के लिए आमने सामने उपस्थित हो गई है । पांचजन्य शंख का घोष भी किया गया है, तब अर्जुन अपने सारथि श्रीकृष्ण को कहता है कि –सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत । (१-२१) जब कृष्ण ने दो सेनाओं के बीच में अर्जुन के रथ को खडा कर दिया तो अर्जुन अपने ही गुरु द्रोण, पितामह भीष्म तथा चचेरे दुर्योधनादि भ्राताओं को अपने सामने देखता है । उसके मन में सवाल उठता है कि यह विनाशकारी युद्ध किस हेतु से किया जा रहा है ? इस युद्ध से कितनी स्त्रियाँ अनाथ हो जायेगी ?, आगे चल कर इनमें से कैसी वर्णसंकरप्रजा पैदा होगी ?,इसका पाप किसको लगेगा ? इत्यादि । वह बोलता है कि- सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ।।(1-29), गाण्डीवं संस्रते हस्तात्, त्वक्चैवैव परिदह्यते । (1-30), न योत्स इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह।। (अध्याय-2-9) अब, मैं नहीं लडूँगा के विचार से शुरू हुआ संवाद, जब अठारवे अध्याय में पहुँचता है तो अर्जुन के मन का समाधान होता है और वह घोषित करता है कि- नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत । स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ।। (१८-७३) इस उपक्रम और उपसंहार पर्यन्त के ग्रन्थ में ७०० श्लोकों का कलेवर खडा है ।। अब, प्रश्न होगा कि भगवद्गीता की पाठालोचना करने की क्या

आवश्यकता है ?, यह ग्रन्थ भारतवर्ष में युगों युगों से सब की आस्था का विषय बना है और वह अतिलोकप्रिय है, इस लिये क्या उसमें स्थान स्थान पर अनेक अशुद्धियाँ और पाठान्तरों का भारी जमावडा हो गया है ?, क्या उसी कारण से पाठालोचना करने की आवश्यकता है ?। तो उसका उत्तर नकार में हैं । भगवद्गीता की पाठालोचना के अन्य अनेक कारण हैं ।

भगवद्गीता में प्राप्त हो रहे पाठान्तरों का परिचय : यह ग्रन्थ लोकप्रिय होते हुए भी उसमें कोई बडी मात्रा में पाठान्तर नहीं है । इसमें जो पाठान्तर मिलते हैं, वे पहले दो अध्याय में ज्यादा है, लेकिन वे बहुत सामान्य कोटि के हैं । गीता के दर्शन में इनसे कोई भारी परिवर्तन भी होने वाला नहीं है । तथापि केवल उनका परिचय कराने के लिए निम्नोक्त कोष्टक देखना चाहिए । उसमें निदर्श के रूप में कुछ पाठभेद दिये हैं :-

	अध्याय -श्लोक	प्रचलित-पाठ	पाठान्तर
1	1-1	धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेतै युयुत्सवः ।	सर्वक्षत्त्रसमागमे
2	1-8	भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः	कृपः शल्यो जयद्रथः
3	1-46	धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ।	प्रियतरं भवेत्
4	2-10	सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ।	उभयोः सेनयोः
5	2-10	सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ।	सीदमान इदं वचः
6	6-9	साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ।	विमुच्यते (इति -शंकरः)
7	9-21	एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा	त्रैधर्म्य0 (इति-शंकरः)
8	18-54	ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति	न हृष्यति (इति – शंकरः)

उपर्युक्त मामूली एवं अल्पसंख्यक पाठान्तरों के कारण, गीता के अर्थघटन में कोई भारी समस्या पैदा हुई नहीं थी । तथापि इस ग्रन्थ की पाठालोचना क्यों इतना महत्त्व रखती है ?- यह समझने के लिए निम्नोक्त शंकाओं पर ध्यान देना चाहिएः- यह गीता युद्ध के मैदान में कही गई है । इसी को देख कर, आधुनिक युग के किसी भी मनुष्य को प्रश्न होगा कि क्या जब दो सेनाएं "आक्रमण.... आक्रमण" की गर्जनाएं कर रही हो, उसके बीच में "युद्ध करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए ?" इस तात्त्विक प्रश्न

पर 700 श्लोकों वाला लम्बा संवाद कैसे हो सकता है ?, दूसरी जिज्ञासा होगी कि क्या रणमेदान में उपर्युक्त प्रश्न के समाधान के लिए पद्यबद्ध संवाद हुआ होगा ?। तीसरा प्रश्न ऐसा भी हो सकता है कि- इन दोनों के बीच में इतना लम्बा और दार्शनिक कोटि का संवाद जब तक चलता रहा होगा तब तक दोनों पक्ष की सेनाओं ने क्या मौन रह कर, इन दोनों को आराम से परामर्श करने का मौका (अवकाश) दिया होगा ?। इत्यादि । ऐसे प्रश्नों का समाधान तो यही हो सकता है कि- मूल में तो श्रीकृष्ण ने कुछ पांच-दश वाक्यों में, पांच-दश मिनिटों में, वह भी गद्य वाक्यों में ही, अर्जुन को युद्ध करने की अनिवार्यता बताई होगी । तथा वर्तमान भगवद्-गीता का 700 श्लोकों वाला स्वरूप तो बाद में लिखा गया होगा । (गीता के आरम्भ में कहा गया है कि हस्तिनापुर के राजमहल में बैठा धृतराष्ट्र संजय से पुछता है कि उनके कौरव बेटों ने और पाण्डु के पुत्रों ने कुरुक्षेत्र के मैदान में क्या किया ?- यह संवाद बाद में, कृष्ण द्वैपायन ने गणेश जी से लिखवाया था ।) । जैसे ही ऐसा समाधान प्रस्तुत करते हैं तो, अनुपदम्, दूसरा प्रश्न खडा होता है कि तो मूल गीता का स्वरूप कैसा रहा होगा ?। इस प्रश्न का समाधान प्राप्त करने के लिए हमें पाठालोचना का ही शरण लेना होगा ।।

भगवद्-गीता के मूलभूत (=आदि) स्वरूप को खोजने के लिए प्रेरित करने वाले कुछ अन्य विचार-बिन्दु भी ज्ञातव्य हैः- (1) भगवद्गीता में बौद्ध परम्परा में प्रचलित हुए कतिपय शब्दों का विनिवेश किया गया है । जैसे कि- (क) ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति (2-72), (ख) भगवान् बुद्ध ने जैसे सारनाथ (ऋषिपत्तन) में धर्मचक्र-प्रवर्तन किया था, वैसे ही श्रीकृष्ण ने भी तीसरे अध्याय में यज्ञचक्र-प्रवर्तन का विचार रखा है । तो इन दोनों में से कौन पहला है ?।, (ग) बुद्ध ने सर्वं दुःखम् । सर्वं क्षणिकम् । सर्वं शून्यम् । का दर्शन दिया था । उसी तरहके विचार श्रीकृष्ण के मुख में भी मिलते हैः- अनित्यम् असुखम् इमं लोकं प्राप्य भजस्व माम् । (9-0) तो इन में तो अनित्यम् शब्द में बुद्ध के "सर्वं क्षणिकम्" का ही अनु-वाद दिखाई रहा है । तथा असुखम् शब्द में बुद्ध के "सर्वं दुःखम्" का ही अनु-वाद दिखाई रहा है । तो किस ने किस के पास से ये विचार लिये होंगे ?। निष्कर्षतः भगवद्गीता में बौद्ध विचारों का प्रतिध्वनि क्यूं सुनाई रहा है ?, इन दोनों के बीच में पौर्वापर्य किस तरह का हो सकता है ?।। इस आशंका का समाधान खोजने के ले भी हमें भगवद्गीता की पाठालोचना करनी चाहिए ।।

(२) महाभारत का तीन बार संस्करण किया गया है । इस वीरचरित काव्य (एपिक) का नाम "जय" काव्य (अथवा जय-संहिता) था । वर्तमान महाभारत के मंगल श्लोक में कहा गया है कि- नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं वाचं ततो जयम् उदीरयेत् ।।- इसमें जय नाम दिया गया है । इसका कलेवर प्रायः 8000 श्लोक वाला था और उसमें कृष्ण द्वैपायन व्यास ने गणेश जी से कौरव-पाण्डवों की केवल युद्ध कथा लिखवाई गई थी । तत्पश्चात् व्यास के शिष्य वैशम्पायन ने उस जय काव्य में भरत वंश की कथा को जोडी । इस लिए वह भारत-संहिता कही गई । इसमें करीब 24,000 श्लोक एकत्र हुए । कालान्तर में तीसरी बार, वही भारत-संहिता में सुत-पुराणीओं ने अनेक नये आख्यान-उपाख्यान को दाखिल किये । और उसको धर्म-काव्य का दरजा दिया । लेकिन अब उसमें श्लोक संख्या 1,00,000 हो गई थी और भारत-संहिता से वह महाभारत संहिता ऐसा नाम धारण करती है ।। इन तीन संस्करणों की बात मूल महाभारत के पाठ में ही दी गई है । [इसीको हमने "प्रोक्त" (प्रवचनेन उक्तम् इति प्रोक्तम् = प्रवचन के माध्यम से विकसित हुआ) साहित्य का नाम दिया है] इसको सुन कर भी प्रश्न होता है कि- भगवद्गीता, जो कि वर्तमान महाभारत के भीष्म पर्व में (700 श्लोकवाली) आती है, वह उसके प्रथम पूर्व रूप में, यानी जय-संहिता में कितने श्लोक वाली था ?, तथा द्वितीय बार की भारत-संहिता में भगवद्गीता कितने श्लोकों वाली रही होगी ?। - सारांशतः इस दृष्टिसे भी मूल भगवद्गीता के स्वरूप के विषय में जिज्ञासा खडी होती ही है ।।

(३) एक अन्य बिन्दु से भी भगवद्गीता के मूल रूप को जानने की जिज्ञासा होती हैः- कहा गया है कि भगवद्गीता में ईशावास्यम् आदि उपनिषदों का सार ग्रहण करके इसकी रचना की गई है । जैसे कि, सर्वोपनिषदो गावो, दोग्धा गोपालनन्दनः । पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता, दुग्धं गीतामृतं महत् ।। अर्थात् उपनिषदों रूपी गायों का दोह करके गोपालनन्दन श्रीकृष्ण ने "भगवद्गीता" नाम का दूध निकाला है, जिसको अर्जुन नाम का वत्स, जो सुधी भोक्ता है, वह पी रहा है ।। इस परम्परागत श्लोक में भगवद्गीता के विषयवस्तु की आधार-सामग्री उपनिषद् से ली गई है- उसकी ओर अंगुलिनिर्देश किया गया है । यहाँ आनुषंगिकतया एक अन्य यह भी जिज्ञासा होती है कि भगवद्गीता में निरूपित अनेक दार्शनिक विषयों को कहाँ कहाँ से लिये गये हैं ? यह भी गवेषणीय है

। सारांशतया- भगवद्गीता का मूल स्वरूप क्या रहा होगा ? यह एक यक्ष प्रश्न है ।।

(४) विद्वानों का मन्तव्य है कि- महाभारत का वर्तमान स्वरूप सम्राट् अशोक (२६९ से २३२ ईसा पूर्व तक) से गुप्तवंश (३२० से ५४७ ई.स.) के बीच में स्थिर हो गया होगा । इसके अन्तर्गत वर्तमान भगवद्गीता का समावेश होता था । तत्पश्चात् आठवीं शती में शंकराचार्य ने इस गीता पर भाष्य लिख कर, उसका पाठ सुस्थिर कर दिया है । तथा शंकराचार्य के बाद गीता में पाठभेद या प्रक्षेप नहीं हुए हैं ।।

[१]

भगवद्गीता का अनेक-कर्तृत्व उद्घाटित करने के प्रयास : अनेक आधुनिक विद्वानों ने उपर्युक्त परामर्श को ध्यान में रखते हुए 700 श्लोक वाली वर्तमान भगवद्गीता में विविध कालखण्ड के स्तरों को खोजने का प्रयास किया है । इन सन्दर्भों का स्वल्प परिचय देना प्रासंगिक होगा :--

(1) महामहोपाध्याय शतायु स्वर्गीय श्री के. का. शास्त्री (गुजरात) ने महाभारत के आरम्भ में दी गई अठारह पर्वों की अनुक्रमणिका को आधार बना कर, महाभारत के पाठ में से 23,282 श्लोक वाली "भारत-संहिता" पृथक्कृत करके प्रकाशित की है । तथा 8801 श्लोक वाली "जय-संहिता" भी तैयार करके प्रकाशित की है । (दोनों का प्रकाशन वर्ष 1977 में गुजरात रिसर्च सोसायटी, अहमदावाद के द्वारा किया गया है ।)
(2) डॉ. एम. आर. यार्दी ने 1977 से 1984 तक भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्युट, पूणें की वार्षिक पत्रिका में अनेक शोध-आलेख लिखे थे । जिनमें उन्होंने महाभारत के विविध पर्वों में प्रयुक्त हुए छन्दों का विश्लेषण करके, विविध कालखण्डों के श्लोकों को पृथक्-कृत किया है ।
(3) रोबर्ट मिनोर ने "गीताकार कौन ?- अनेक-कर्तृत्व का पुनः सिंहावलोकन" शीर्षक से एक शोध-आलेख लिखा था ।
(4) श्री गजानन श्रीपत खैर महोदय ने "गीता – मेरा संशोधन और मेरा अर्थघटन" नाम के पुस्तक में भगवद्- गीता के तीन तीन रचयिताओं की कलम को आन्तरिक प्रमाणों के आधार पर पृथक्-कृत करके दिखाये हैं ।

इनमें से प्रॉफेसर श्री जी. एस. खैर के निष्कर्षों का स्वल्प परिचय देना उपकारक

होगाः- महान् ग्रन्थ-कर्ता या महान् कविओं में एक निश्चित निरूपण-शैली एवं शब्दावली होती हैं, जो इनको दूसरे रचयिताओं से पृथक् कर देती हैं । इसी मानदण्ड के आधार पर देखा जाय तो भगवद्गीता तीन तीन रचयिताओं की संमिलित रचना है । इस मानदण्ड के परिप्रेक्ष में भगवद्गीता की निरूपण-शैली एवं विचारों में जो बहुविधता प्राप्त होती है, उसका परिचय निम्नोक्त हैः-

(क) एक ही अध्याय में एक ही विभावना (concept) के लिए भिन्न प्रकार की शब्दावली का प्रयोग क्यूं किया जा रहा है ? जैसे कि- अध्याय-9 में "प्रकृति और पुरुष" के लिए ही "क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ" शब्दों का प्रयोग मिलता है ।

(ख) एक ही शब्द का अर्थ दूसरे सन्दर्भ में कुछ अलग ही अर्थ देता है । जैसे कि, ब्रह्मन्, पुरुष, स्वभाव ।

(ग) कोई एक ही ग्रन्थकार एक सर्वोच्च तत्त्व के लिए कैसे भिन्न भिन्न शब्दों का प्रयोग करेगा ? जैसे कि, ब्रह्मन्, ईश्वर, परमात्मा ।

(घ) श्रीकृष्ण अपने मुख से सर्वोच्च आत्म-तत्त्व के लिए कुत्रचित् प्रथम पुरुष (Third person) का क्रियापद का उपयोग करते हैं, तो कदाचित् उत्तम पुरुष (First person) का भी उपयोग करते हैं । ऐसा क्यूं ? जैसे कि, मुनिः ब्रह्म गच्छति ।, स माम् एति ।

(ङ) समग्र गीता में कुछ विचारों की पुनरुक्तियाँ देखी जाती हैं। जैसे कि, संन्यास, यज्ञ, ज्ञान-विज्ञान ।

(च) मनुष्यों का स्वभाव तात्त्विक दृष्टि से अध्याय 14में "सत्त्व, रजस्, तमस्" के नामों से वर्णित करने के बाद, उसी बिन्दु को अध्याय 16 में "दैव एवं आसुर" के नाम से बताया जाता है ।

(छ) आदर्श पुरुषों के निरूपण में एक समान व्यक्तित्व को वर्णित किया गया हैः- जैसे कि, स्थितप्रज्ञ, तत्त्वविद्, भगवद्भक्त, गुणातीत । क्या इसके पीछे दो-तीन कविओं का हाथ नहीं हो सकता ?

(ज) अर्जुन ने प्रथम अध्याय (कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।... स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ।। 1-40,41) में वर्ण-संकर प्रजा की समस्या पैदा होने का भय जताया है, लेकिन उसका जवाब तो कहीं नहीं दिया

गया है ?

(झ) अलग अलग अध्यायों में व्याकरण की अशुद्धियाँ की मात्राएं भी एक समान नहीं है।

(ञ) मोक्ष के विचार के लिए विभिन्न शब्दावली का उपयोग किया गया हैः- अमृतत्वम्, दिव्यं पुरुषम्, माम्, परमं धाम । ऐसा क्यूं ?, यदि गीता का रचयिता एक ही हो तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

(ट) कुरुक्षेत्र के संग्राम में कृष्ण और अर्जुन के बीच में जो संवाद हुआ होगा वह क्या गद्य में था, या फिर पद्य में हुआ था ?, यदि गद्य से पद्य में रूपान्तरित किया गया हो तो, वह किसने किया ?

(ठ) "अर्जुन की समस्या का समाधान क्या है" ?- इस प्रश्न पर, सभी आचार्यों के मतों में क्यूं इतना अन्तर एवं वैविध्य है ?

(ड) अन्तिम प्रश्नः- गीता का स्वरूप मूल में लघु आकार वाला था ?, यदि बाद में उसका विस्तार किया गया हो तो, क्या किसी एक ही व्यक्ति ने विस्तार किया था या फिर अनेक व्यक्तिओं ने मिल कर ?, अथवा क्या पहले से ही, आज जैसी ही, 700 श्लोकों वाली गीता प्रचलन में रही है ? । इत्यादि ।।

भगवद्गीता यदि किसी एक ही रचयिता की कृति है तो किसी एक ही विषय से सम्बद्ध जो भी विचार रखे जायेंगे उनमें एकरूपता होनी अपेक्षित है । लेकिन भगवद्गीता में ऐसा नहीं है। उदाहरणतया-

(क) मोक्षपुरुषार्थ के विषय में दो-तीन प्रकार से मोक्ष का स्वरूप दिखाया गया हैः- 1. योगयुक्तो ब्रह्म गच्छति ।, 2. मद्भावम् आगताः ।, 3. पदम् अव्ययम् तत् । इस आन्तरिक प्रमाण से लगता है कि भगवद्गीता किसी एक ही रचयिता ने, एक ही समय पर, नहीं लिखी है।

(ख) गीता में आदर्श श्रेष्ठ पुरुषों का त्रिविध निरूपण किया गया है, जैसे कि- स्थितप्रज्ञ (अ. 2), ब्रह्मविद् (अ. 5), गुणातीत व्यक्ति (अ. 14) वह भी, यह गीता भिन्न भिन्न व्यक्तिओं ने लिखी है- ऐसा सूचित करती है।

प्रॉ. खैर के मतानुसार- भगवद्गीता का विस्तार तीन स्तर में विभाजित किया जा

सकता है। जैसे कि,

[क] प्रथम स्तर के कवि है व्यास जी स्वयं, इसमें प्रथम षट्क यानी अध्याय 1 से 6 का समावेश होता है । तथा वहाँ पर प्रायः तद्, एतद्, इदम्, यद् जैसे सर्वनाम, जो प्रथम पुरुष (Third person)के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम होते हैं, उनका श्लोक में प्रयोग किया गया है।

[ख] दूसरे स्तर में, द्वितीय षट्क के अध्याय 7 से 12 का समावेश होता है। इसके रचयिता सौति हो सकते हैं, जो तीसरे कवि है, जिन्होंने गीता को अन्तिम रूप दिया है । उनकी शैली भिन्न है, जिसको उनके द्वारा प्रयुक्त किये गये अस्मद् सर्वनाम के प्रयोगों से सरलता से पहचाने जाते सकते हैं । ऐसे सर्वनाम उत्तम पुरुष (First person) के लिए प्रयुक्त होते हैं।

[ग] अब, रहा तृतीय षट्क (अध्याय 13 से 18) का रचयिता द्वितीय कवि, जो सम्भवतः वैशम्पायन हो सकते हैं ।(अथवा पहले और तीसरे षट्क के रचयिता यदि एक ही व्यक्ति होगा, तो बीच वाले षट्क का कवि तो निश्चित पृथक् व्यक्ति ही है । यानी गीता के कम से कम दो रचयिता मानना ही होगा।)

बीच वाले षट्क का (अध्याय 7 से 12) का रचयिता व्यक्ति श्रीकृष्ण के मुख से "अस्मद्" सर्वनाम का एकवचन में विनियोग करवाता है। इस विभाग में कहीं पर भी प्रथम पुरुष के क्रियापद के साथ प्रयुक्त होने वाले (तद्-यद्-एतद्-इदम्-अदस् आदि) सर्वनामों का प्रयोग नहीं मिलता है। किन्तु पहले और तीसरे षट्क में, जहाँ पर तद्-यद्-एतद्-इदम्-अदस् आदि सर्वनामों के साथ प्रथम पुरुष के क्रियापदों वाले श्लोकों का ही आधिपत्य हैं, उनमें भी बीच बीच में उत्तम पुरुष के क्रियापदों के साथ प्रयुक्त होने वाले अस्मद् सर्वनाम का प्रयोग भी अन्तरायभूत होते दिखाई रहे हैं। इससे सूचित होता है कि- प्रक्षेपों के द्वारा पहला और तीसरा षट्क का विस्तार करने वाला यही (सौति) व्यक्ति ही हैं।

[क]

गीता के अध्याय 2 से अध्याय 6 पर्यन्त के श्लोकों में प्रथम पुरुष के सर्वनाम

(एतद्-यद्-तद्) / क्रियापद का आधिक्य है । [यद्यपि कुत्रचित् बीच बीच में उत्तम पुरुष के सर्वनाम (अस्मद्) / क्रियापद भी दिखाई रहे हैं] यह प्रथम षट्क मूल व्यास की, प्रथम स्तर की, रचना हो सकती है । इसमें कुल 126 श्लोक का समावेश होता है ।। उदा.

अध्याय-2, (24) नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः । (इदम् सर्वनाम का पुंलिंग- अयम्)

[अध्याय-2,(61) तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । (अस्मद् सर्वनाम का उपयोग)]

अध्याय-3, (15) तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् । (इसमें सर्वनाम तद् =ब्रह्म का प्रयोग)

[अध्याय-3,(30) मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा । (सर्वनाम अस्मद् से मयि)]

अध्याय-4,(31) यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् । (सर्वनाम तद् =ब्रह्म का प्रयोग)

[अध्याय-4,(9) त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति, मामेति सोऽर्जुन । (सर्वनाम अस्मद्- माम् का प्रयोग)]

अध्याय-5,(10) ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । (सर्वनाम यद् का प्रयोग)

[अध्याय-5,(29) सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति । (सर्वनाम अस्मद्- माम् का प्रयोग)]

अध्याय-6,(27) उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् । (सर्वनाम तद्- सः, उपैति क्रियापद)

[अध्याय-6,(14) मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः । (सर्वनाम अस्मद्- मत् का प्रयोग)]

[ख]

तत्पश्चात् जो दूसरा षट्क है, यानी अध्याय 7 से 12 पर्यन्त का भाग, उसमें उत्तम पुरुष के क्रियापदों का ही बाहुल्य है । इन श्लोकों का वक्ता निरन्तर अपने लिये अहम्, माम्, मया, मत्, मयि इत्यादि सर्वनामों का प्रयोग करता है । यह दूसरा षट्क सौति की रचना हो सकती है और उसको आदि के छह अध्याय एवं अन्तिम छह अध्यायों के बीच में स्थापित किया गया है । यह बीच वाली रचना तृतीय स्तर की रचना है । इसमें 119 श्लोकों का समावेश होता है । (प्रथम षट्क के जिन 96 श्लोकों में उत्तम पुरुष का प्रयोग हुआ है वे भी सौति की रचना होगी ।)।। उदाहरणतया-

अध्याय-7,(1) मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

अध्याय-7,(7) मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ।

अध्याय-7,(14) दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

अध्याय-8,(5) अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

अध्याय-8,(21) यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।।
अध्याय-9,(10) मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
अध्याय-9,(24) अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
अध्याय-10,(22) वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः ।
अध्याय-10,(41) तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ।
अध्याय-11,(32) कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो- ।
अध्याय-11,(53) नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
अध्याय-12,(2) मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।

इस षट्क में बहुत कम संख्या में सः, यः, एषः जैसे सर्वनामों का तथा प्रथम पुरुष (Third person) के क्रियापद् का विनियोग हुआ है । जैसे कि- 8-8 में,

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ।।

[ग]

अब, जो तीसरा षट्क है, उस (अध्याय 13 से 18) में प्रथम पुरुष (Third person) के सर्वनाम / क्रियापदों का आधिक्य दिखता है । (साथ में उत्तम पुरुष का अस्मद् सर्वनाम भी कुत्रचित् मिलते हैं ।) इसको वैशम्पायन की, द्वितीय स्तर की रचना, मानी जा सकती है । (अथवा पहले षट्क के रचयिता ने ही इस तीसरे षट्क को लिखी होगी ।) इसमें कुल 119 श्लोकों का समावेश होता है ।। उदाहरणतया-

अध्याय-13,(1) एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः । (यः सर्वनाम के साथ वेत्ति क्रियापद)
[अध्याय-13,(2) क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।। (अस्मद् सर्वनाम का उपयोग)]
अध्याय-14,(20) गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवम् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ।। (सः सर्वनाम के साथ अश्नुते क्रियापद)
[अध्याय-14,(27) ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम् अमृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ।। (अस्मद् सर्वनाम का उपयोग)]
अध्याय-18,(20) सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते । (यः सर्वनाम के साथ वेत्ति क्रियापद)
[अध्याय-18,(56) मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ।। (अस्मद् सर्वनाम का उपयोग)]

प्रॉफेसर श्री खैर कहते हैं कि- तीसरे कवि ने (= सम्भवतः सौति ने) जो बीच वाले (अध्याय 7 से 13) षट्क का प्रक्षेप किया है, वह अपनी विशिष्ट शैली के कारण ही पहचाना जा सकता है । वह तर्क की बात करता नहीं हैं, बल्कि वह तो भक्तों से श्रद्धा की अपेक्षा रखता है, रहस्य की बात करता है और अलौकिक सत्ता की बात करता है । तथा आवश्यकता अनुसार भय भी दिखता है, भ्रमित करता है । और, अन्ततो गत्वा अचिन्त्य दिव्य रूप को प्रकट करवा कर, अपने आप को ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करता है ! उसी तीसरे कवि ने अध्याय 12 से लेकर 15 के बीच में भक्ति की लहरी बहा दी है । तथा अध्याय 11 में विश्वरूप दर्शन दिखा कर, सभी पाठकों (श्रोताओं) को संमोहित भी कर दिये हैं । यह तीसरे स्तर का कवि (सौति) अपने विचारों से पृथक् सोचने वाले को नराधम, अल्पबुद्धि, नष्ट, विभ्रान्त, आसुराः, मूढ भी कह डालता है । इसको पहचानना तनिक भी मुश्कील नहीं है ।।

अशुद्धियाँ, या व्याकरण से असम्मत शब्दप्रयोग के मानदण्ड को लेकर सोचा जाय तो- तृतीय स्तर की रचना (द्वितीय षट्क =अध्याय 7 से 12) करने वाला व्यक्ति व्याकरण की अशुद्धियाँ भी नहीं करता है । यह भी उसका उत्तरवर्ती काल का होने का एक प्रमाण है । उसके प्रतिपक्ष में, जो प्रथम षट्क का कवि (व्यास) है, उसने तीन अशुद्धियाँ की है । तथा तृतीय षट्क में (अध्याय 13 से 18 में), जिसके रचयिता वैशम्पायन माने जा सकते हैं, उसमें कुल 30 अशुद्धियाँ पायी जाती हैं । इस तरह से, तीनों षट्कों के रचयिता पृथक् पृथक् व्यक्ति है- यह सिद्ध करने का यह अकाट्य प्रमाण भी प्रॉ. खैर ने दिया है ।।

अब, उपसंहार के रूप में तीनों के द्वारा लिखे गये / प्रक्षिप्त किये गये श्लोकों का विवरण देना जरूरी हैः- मूल गीता के रचयिता ने 126 श्लोक प्रथम षट्क के लिए लिखे होंगे । दूसरे रचयिता ने जो अन्य षट्क जोडा होगा उसने 119 श्लोक लिखे हैं । अन्त में, जो तीसरा व्यक्ति आया उसने पूरे काव्य का स्वरूप ही बदल दिया । इसी तीसरे व्यक्ति ने बीच वाले छह अध्याय उठा कर, अन्त में रख दिये और अपने छह अध्याय बीच में स्थापित कर दिये । इस तीसरे व्यक्ति ने पहले वाले रचयिता की 126 श्लोकवाली रचना में अपने 154 श्लोक दाखिल किये । और, दूसरे रचयिता के षट्क में (यानी अ. 13-से-18 में) नये 96 श्लोक भी जोड दिये । उनके ये नये प्रक्षिप्त किये गये

श्लोकों को उसने विविध अध्यायों में, अलग अलग विषयों की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए, आवश्यकता के अनुसार अलग चातुरीपूर्वक अलग जगह में चिपकाये हैं। जिसके कारण वर्तमान गीता आकारित हुई है । यह तीन तीन रचयिताओं की संमिश्रित रचना बन गई है, जिसमें प्रत्येक रचयिता की विशेषता, विशिष्ट निरूपण शैली, निश्चित दार्शनिक विचारधारा, पसंदगी की पारिभाषिक शब्दावली इत्यादि प्रतिबिम्बित हो रही है। भगवद्गीता के अनेककर्तृत्व पर अद्यावधि जो शोधकार्य हुए हैं, उनमें प्रॉ. खैर का अभिमत सर्वोपरि प्रतीत होता है।।

[२]

भगवद्गीता की प्राचीन टीकाएं एवं प्राचीन पाण्डुलिपियाँ :- (१) निर्णय सागर प्रेस, मुंबई ने ई. स. १९१२ में अभिनवगुप्त पादाचार्य की "गीतार्थ-संग्रह" टीका के साथ भगवद्गीता प्रकाशित की थी। इस प्रकाशन का आधार (क) जयपुर के किसी पण्डित से प्राप्त की गई "नातिशुद्धम्" पाण्डुलिपि एवं (ख) डेक्कन कॉलेज, पूणें से प्राप्त की गई "प्रायः शुद्धम्" पाण्डुलिपि थी । (सम्भवतः डेक्कन कॉलेज, पूणें से प्राप्त की गई यह दूसरी पाण्डुलिपि जोर्ज ब्युलर ने "काश्मीर-राजपुताना-मध्य भारत" से संग्रहीत की पाण्डुलिपियों में क्रमांक ४३२ वाली देवनागरी पेपर मेन्युस्क्रिप्ट है ।) । अभिनवगुप्त की टीका में स्वीकृत पाठ काश्मीरी वाचना का पाठ था- ऐसा प्रथम बार फेडरिक ओटो श्रेडर ने आशंकित किया। (२) इन्डिया ऑफिस लाईब्रेरी, लंदन में ३२७१ क्रमांक से कागज पर लिखी रामकण्ठ की "सर्वतोभद्र" टीका मिलती है, जो ई.स. १७५० में लिखी गई है। तथा वह काश्मीर की देवनागरी लिपि में लिखी गई है। (३) लाईब्रेरी ऑफ ब्रिटीश म्युझियम, लंदन में भूर्जपत्र पर शारदा लिपि में लिखी अपूर्ण पाण्डुलिपि है, जिसका क्रमांक- "ओरिएन्टल ६७६३-डी" है । इसमें भगवद्गीता के अध्याय ८ के श्लोक १८ तक का पाठ मिलता है। इन तीनों के आधार पर, जर्मनी के विद्वान् फेडरिक ओटो श्रेडर ने १९३० में भगगवद्गीता की काश्मीरी वाचना का प्रकाशन किया था। तथा शंकराचार्य के द्वारा स्वीकृत भगवद्गीता के प्रचलित पाठ से इस काश्मीरी गीता का पाठ अनेक स्थानों में भिन्न है । अतः इस काश्मीरी भगवद्गीता को प्रचलित (= शंकाराचार्य के भाष्य में प्रतिबिम्बित हो रही) भगवद्गीता से पृथक् एवं प्राचीनतर

माननी चाहिए- ऐसा ऑटो श्रेडर का मन्तव्य है ।।

काश्मीरी गीता के पाठ को प्रस्तुत करने वाली शारदा-लिपि-निबद्ध भूर्जपत्रवाली 6763-डी, लंदन की पाण्डुलिपि का थोडा परिचय इस तरह का हैः- 1. उसमें क-कार एवं प-कार से पूर्व में आये विसर्ग के लिये जिह्वामूलीय एवं उपध्मानीय के लिए (मनुष्यों के ओष्ठाकार के) चिह्नों का विरल प्रयोग प्राप्त होता है, जो उसकी प्राचीनतरता को सिद्ध करता है । 2. अलग अलग अध्यायों की पुष्पिका में निम्नोक्त विशेषताएं पायी जाती हैः- (क) इति श्रीमद्भगवद्गीता-सूपनिषत्सु कर्मयोगप्रशंसो नाम तृतीयोऽध्यायः । (ख) इति श्रीमद्-भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मयोगप्रशंसो नाम चतुर्थोऽध्यायः । (ग) प्रकृतिगर्भो नाम पञ्चमोऽध्यायः । इत्यादि ।। 3. इस पाण्डुलिपि में, जहाँ पर भी श्लोक के वक्ता का निर्देश किया गया है उसमें "उवाच" शब्द का प्रयोग नहीं है, किन्तु केवल श्रीभगवान् । अर्जुनः । इतना ही मिलता है ।।

जर्मन विद्वान् श्रेडर ने इस शारदा लिपिबद्ध गीता की काश्मीरी वाचना का जो पाठ प्रकाशित किया है, उसमें कैसे प्रक्षेप तथा पाठान्तारदि मिलते हैं उसका परिचय प्राप्त करना चाहिएः-

1. इस काश्मीरी वाचना के पाठ में निम्नोक्त16 श्लोक अधिक हैः-

		काश्मीरी वाचना के कतिपय श्लोकों का पाठ, जो प्रचलित गीता के पाठ में नहीं हैं :-
1	अध्याय- २- १०क	श्रीभगवान् – त्वं मानुष्येणोपहतान्तरात्मा विषादमोहाभिभवाद् विसंज्ञः । कृपागृहीतः समवेक्ष्य बन्धून् अभिप्रपन्नन् मुखम् अन्तकस्य ।।
2	अध्याय-2, ४८ के बाद	यस्य सर्वे समारम्भा निराशीर्बन्धनास्त्विह । त्यागे यस्य हुतं सर्वम् स त्यागी स च बुद्धिमान् ।।
3	अध्याय-3, ३७ के बाद	भवत्येष कथं कृष्ण कथं चैव विवर्धते । किमात्मकः किमाचारस्तन् ममाचक्ष्व पृच्छतः ।।
4	"	श्रीभगवान् – एष सूक्ष्मः परः शत्रुर्देहिनाम् इन्द्रियैः सह । सुखतन्त्र इवासीनो मोहयन् पार्थ तिष्ठति ।।
5	"	कामक्रोधमयो घोरः स्तम्भहर्षसमुद्भवः । अहंकारोऽभिमानात्मा दुस्तरः पापकर्मभिः ।। हर्षमस्यनिवर्त्यैष शोकम् अस्य ददाति च ।

6	अध्याय-5, १७ के बाद	स्मरतोऽपि मुहुस्त्वेतत् स्पृशन्तोऽपि स्वकर्मणि । सक्ता अपि न सजन्ति पङ्के रविकरा इव ।। (बहुत सुन्दर उपमा)
7	अध्याय-6, 37के बाद	अयतः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः । लिप्समानः सतां मार्गं प्रमूढो ब्रह्मणः पथि ।। अनेकचित्तोऽविश्रान्तो मोहस्यैव वशं गतः ।
8	अध्याय-9, 6 के बाद	एवं हि सर्वभूतेषु चराम्यनभिलक्षितः । भूतप्रकृतिम् आस्थाय सह चैव विनैव च ।।
9	अध्याय-11, 39 में वृद्धि	वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च । अनादिमान् अप्रतिमप्रभावः सर्वेश्वरः सर्वमहाविभूते । (अधिक) नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।39
10	अध्याय-11, ४०के बीच में वृद्धि	नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व । न हि त्वदन्यः कश्चिद् अस्तीह देव लोकत्रये दृश्यतेऽचिन्त्यकर्मा । अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ।।
11	अध्याय-11, २७ के बाद	नानारूपैः पुरुषैर्योध्यमाना विशन्ति ते वक्त्रम् अचिन्त्यरूपम् । यौधिष्ठिरा धार्तराष्ट्राश्च योधाः शस्त्रैः कृत्ता विविधैः सर्व एव । त्वत्तेजसा विहता नूनम् एव तथा हीमे त्वच्छरीरप्रविष्टाः ।।
12	अध्याय-11, ४४ के बाद	दिव्यानि कर्माणि तवाद्भुतानि पूर्वाणि पूर्वा ऋषयः स्मरन्ति । नान्योऽस्ति कर्ता जगतस्त्वमेको धाता विधाता च विभुर्भवश्च ।।
13	"	तवाद्भुतं किं नु भवेद् असह्यं किं वा शक्यं परतः कीर्तयिष्ये । कर्तासि सर्वस्य यतः स्वयं वै विभो ततः सर्वमिदं त्वमेव ।।
14	"	अत्यद्भुतं कर्म न दुष्करं ते कर्मोपमानं न हि विद्यते ते । न ते गुणानं परिमाणम् अस्ति न तेजसो नापि बलस्य नर्द्धेः ।।
15	अध्याय-18 के आरम्भ में	प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च । एतग् वेदितुमिच्छामि ज्ञानं ज्ञेयं च केशव ।। (अधिक)

2. उसमें जो पाठान्तर मिलते हैं उनके निदर्श निम्नोक्त हैः-

	काश्मीरी वाचना में प्राप्त हो रहे पाठभेद	शंकराचार्य द्वारा स्वीकृत प्रचलित पाठ
1	धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे सर्वक्षेत्रसमागमे0 1-1	०समवेता युयुत्सवः ।
2	नायकान् मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते	नायका मम0
3	नानाशस्त्रप्रहरणाः नानायुद्धविशारदाः	सर्वे युद्धविशारदाः
4	उभयोः सेनयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ।	सेनयोरुभयोर्मध्ये0
5	कृपया परयाविष्टो सीदमानोऽब्रवीद् इदम्	विषीदन्निदमब्रवित्

6	सीदन्ति सर्वगात्राणि मुखं च परिशुष्यति	मम गात्राणि
7	स्रंसते गाण्डीवं हस्तात्	गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्
8	अशोच्यान् अन्वशोचंस्त्वं प्रज्ञावन्नभिभाषसे	०प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
9	न त्वर्थकामस्तु गुरून्निहत्य0 । 2-5	हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
10	नेहाभिक्रमनाशोस्ति प्रत्यवायो न दृश्यते । 2-40	०प्रत्यवायो न विद्यते
11	अप्राप्त 2-67 (पूरा श्लोक नहीं है ।)	इन्द्रियाणां हि चरतां0
12	अप्राप्त 2-68 (पूरा श्लोक नहीं है ।)	तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहितानि
13	नानवाप्तम् अवाप्तव्यं प्रवर्ततेऽथ च कर्मणि । 3-22	० वर्तत एव च कर्मणि
14	गुणा गुणार्थेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते । 3-28	गुणा गुणेषु0
15	न मां कर्मणि लिम्पन्ति न मे कामः फलेष्वपि 4-14	०न मे कामफले स्पृहा
16	.... स योगी स सुखी मतः । 5-23	.. स युक्तः स सुखी नरः
17	अनयोर्यात्यनावृत्तिम् एकयाऽऽवर्ततेऽन्यया 8-26	एकया यात्यनावृत्तिमन्यया0
18	वेदानां सामवेदोऽहम्0 । 10-22	वेदानां सामवेदोऽस्मि
19	क्लेशोऽधिकतरस्तेषां सर्वत्राव्यक्तचेतसाम् ।12-5	अव्यक्तासक्तचेतसाम्
	इत्यादि । (= कुल 282 पाठान्तर मिलते हैं)	

इस काश्मीरी वाचना के विषय में श्रेडर का मन्तव्यः- काश्मीरी भगवद्गीता के पाठ में प्रचलित गीता का पाठ बीच बीच में संमिलित होता गया होगा, एवमेव काश्मीर प्रदेश का सुप्रचलित प्रत्यभिज्ञादर्शन भी, विस्मृत होनेलगा होगा।

[३]

भगवद्गीता की कितनी वाचनाएं हैं ? :- अभी तक मिली जानकारी के अनुसार तीन प्रकार की गीता प्रकाश में आयी हैं । (क) महाभारत के भीष्म पर्व के अध्याय 25 से 42 पर्यन्त 700 श्लोक वाली भगवद्गीता, जिस पर जगद्-गुरु आदि शङ्कराचार्य ने (ई.स. 788 से 820) भाष्य लिखा है । (ख) मद्रास से शुद्ध धर्म-मण्डल की भगवद्गीता, सं. के. टी. श्रीनिवासाचार्य । इसमें 745 श्लोक हैं । इस पर हंसयोगिन् की टीका मिलती है । (ग) काश्मीरी वाचना की भगवद्गीता, सं. फेडरिक ओटो श्रेडर, 1930. । इसमें भी कुल 716 श्लोकों का विस्तार है । अतः प्रश्न होता है कि मूल गीता अर्थात् सच्ची गीता कौन है ?। (उपर्युक्त [1] विभाग में हमने जो चर्चा रखी है, वह महाभारत

के भीष्म पर्वान्तर्गत आये जिन 700 श्लोकों पर शंकराचार्य ने भाष्य लिखा है, उसकी पाठालोचना की है । अब, इसी विषय का विस्तार करके निम्नोक्त चर्चा की जा रही है।)

लंदन में Charles Wilkins का भगवद्गीता का प्रथम बार अंग्रेजी अनुवाद 1785 में प्रकाशित होने के बाद, विल्हेल्म हम्बोल्ट नाम के विद्वान् ने कहा कि इसमें बहुत बडी मात्रा में प्रक्षिप्त श्लोक है । वे मानते थे कि अ. 13 से 18 तक का भाग बाद में जोडा गया होगा । तत्पश्चात् ई.स. 1930 में एफ. ओटो श्रेडर (F.Otto Schrader) ने भगवद्गीता की काश्मीरी वाचना को खोज निकाली । इसके लिए उनके पास शारदा लिपि में लिखी भगवद्गीता की एक अपूर्ण पाण्डुलिपि थी, तथा राजानक रामकवि की सर्वतोभद्र नाम की टीका थी । इनके सहारे उन्होंने प्राचीनतर एवं अधिक श्रद्धेय गीता का काश्मीरी पाठ तैयार किया था । श्रेडर के मत से उनका काश्मीरी वाचना का पाठ "बहुमान्य (Vulgate text) (शंकराचार्य द्वारा स्वीकृत) गीता के पाठ" से भिन्न तथा अधिक श्रद्धेय है । इस गवेषणा का तुरंत प्रतिवाद भी हुआ, जिसमें एटजर्टन एवं एस. के. बेलवालकर जैसे विद्वानों ने श्रेडर के मत का खण्डन किया । [द्रष्टव्यः- S'ri-Mad-Bhagavad-Gita, (with the ज्ञान-कर्मसमुचय Tika of Anand(vardhana), Ed. By S. K. Belvalkar, Bilvan-kunja Publishing House, Poona, 1941.] तत्पश्चात् भाण्डारकर ओरिएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्युट, पूणें के द्वारा भगवद्गीता की समीक्षित आवृत्ति (Critical Edition) भी प्रकाशित की गई । तथापि यह प्रश्न शान्त नहीं हुआ । जिससे यह सूचित होता है कि भगवद्गीता की एकाधिक वाचनाएं हो सकती हैं ।

महाभारत में भीष्म पर्वान्तर्गत अध्याय-43, श्लोक-4 में "गीतामान" (गीता का परिमाण कितना) का उल्लेख मिलता है । तदनुसार, वैशम्पायन की भगवद्गीता में 745 श्लोकों का समावेश होता हैः-

षट् शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशवः ।
अर्जुनः सप्तपञ्चाशत् सप्तषष्टिं तु सञ्जयः ।
धृतराष्ट्र श्लोकमेकं गीताया मानम् उच्यते ।। भीष्म पर्व, 43-4।।

अर्थात् 620 श्लोक श्रीकृष्ण के मुख से निकले हैं । अर्जुन ने 57 श्लोकों का उच्चारण किया हैं । सञ्जय के मुख में 67 श्लोक रखे गयें हैं । तथा धृतराष्ट्र के मुख में केवल एक ही श्लोक रखा गया है । इस तरह से भगवद्गीता में कुल 745 श्लोक गिनाये गये हैं ।। इसको

पढते ही प्रश्न उठता है कि- महाभारत जिस 745 श्लोक वाली गीता की बात करता है, वह क्या हंसयोगिन् की जिस पर टीका है और जो मद्रास से 745 श्लोक वाली प्रकाशित हुई गीता है- वह गीता है ?। (किन्तु ऐसा तो नहीं है, क्योंकि मद्रास की गीता में 26 अध्याय है, तथा उसका पाठ सर्वथा भिन्न है । जो एक "थियोसोफिकल गीता" को प्रस्तुत करती है ।)

श्री शङ्कराचार्य जी ने भगवद्गीता के जिन 700 श्लोकवाले पाठ पर अपना भाष्य लिखा है वह आठवीं शती से सुस्थिर हुआ और सार्वत्रिक प्रचलन में आ गया पाठ है । उसके अध्याय- 1 में 47 श्लोक, अध्याय- 2 में 72 श्लोक, अध्याय- 3 में 43 श्लोक, अध्याय- 4 में 42 श्लोक, अध्याय- 5 में 29 श्लोक, अध्याय- 6 में 47 श्लोक, अध्याय- 7 में 30 श्लोक, अध्याय- 8 में 28 श्लोक, अध्याय- 9 में 34 श्लोक, अध्याय- 10 में 42 श्लोक, अध्याय- 11 में 55 श्लोक, अध्याय- 12 में 20 श्लोक, अध्याय- 13 में 34 श्लोक, अध्याय- 14 में 27 श्लोक, अध्याय- 15 में 20 श्लोक, अध्याय- 16 में 24 श्लोक, अध्याय- 17 में 28 श्लोक और अध्याय- 18 में 78 श्लोक = 700 ही उपलब्ध हो रहे हैं ।। श्रेडर ने जो काश्मीरी वाचना का 716 श्लोक वाला पाठ प्रस्तुत किया है, वह शङ्कराचार्य के पाठ से भिन्न है । काश्मीरी वाचना की गीता में 1. श्लोकानुक्रम भिन्न है, 2. महाभारत के कई श्लोक इसमें समाविष्ट है, 3. अनेक नवीन पाठभेद हैं, 4. कुछ श्लोक ऐसे भी हैं कि जो अन्यत्र नहीं मिलते हैं । तथा वैशम्पायन के द्वारा निर्दिष्ट "गीतामान" का 745 श्लोक वाला पाठ है, उससे भी श्रेडर का पाठ भिन्न है । इस सन्दर्भ में एक स्पष्टता करणीय है- मद्रास से "हंसयोगिन्" की टीका के साथ जो गीता प्रकाशित की है, उसमें भी 745 श्लोकवाला ही पाठ है । लेकिन वह "गीतामान" वाले पाठ से सर्वथा भिन्न है ।।

काश्मीरी वाचना की गीता में प्राप्त हो रहे पूर्वोक्त पाठान्तरों को देख कर लगता है कि ये महत्त्वपूर्ण नहीं हैं । और, प्रॉ. एस. के. बेलवालकर जी ने कहा है कि- काश्मीरी वाचना में मिल रहे 282 पाठभेदों को चार भाग में वर्गीकृत किये जा सकते हैं । इन तमाम पाठभेदों में स्पष्टतया लिपिकार के स्खलन, व्याकरण की क्षतिओं को हटाने का उपक्रम एवं दुरूह शब्दों का सरली-करण (lectiones faciliores) करने का आशय रहा है । डॉ. बेलवालकर जी ने यह भी कहा है कि श्रेडर की काश्मीरी

वाचना का पाठ शंकराचार्य के द्वारा स्वीकृत पाठ-परम्परा से कुछ ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है । तथा उपरि भाग में निर्दिष्ट जो सोलह नवीन श्लोक मिलते हैं, वे भी काश्मीरी वाचना का महत्त्व सिद्ध नहीं कर सकते हैं, वे प्रक्षिप्त ही है । महाभारत की समीक्षित आवृत्ति बनाने में महाभारत की जो काश्मीरी शारदा-पाण्डुलिपि का उपयोग किया गया है, उसमें यह श्रेडर वाली भगवद्गीता नहीं है ! अतः इसको "काश्मीरी वाचना की भगवद्गीता" कहना उचित नहीं है ।। इसी तरह से, प्रॉ. एडजर्टन ने भी एफ. ओटो श्रेडर की काश्मीरी वाचना का "रिव्यु" (समीक्षा) किया तब लिखा कि- श्रेडर के मत से उनकी काश्मीरी वाचना वाली भगवद्गीता में जो 14 पूर्ण +4 अर्ध श्लोक अधिक हैं, उनको "प्रक्षेप" (Addition) के रूप में देखा जाना चाहिए । श्रेडर ने जो कहा था कि काश्मीरी वाचना के ये अधिक श्लोक प्रचलित गीता (शंकराचार्य के द्वारा स्वीकृत) में से निकाले (omissions) गये श्लोकों हैं – वह मत भी स्वीकार्य नहीं है । जयदीप बागची तथा विश्वा अदलुरी के मत से इन अधिक श्लोकों का छन्दःपरीक्षण करने पर भी वे प्रक्षिप्त ही लगते हैं ।।

सन्दर्भाः-

1. द्रष्टव्यः- भगवद्गीता की समीक्षितावृत्ति । सं. एस. के. बेलवालकर, बी.एच.-यू.-, वाराणसी, 1941
2. The Multiple authorship of the Mahabharata : A statistical approach by Dr. M.R. Yardi, Published in The Annals of BORI., (in 1977, 1978, 1982, 1983, 1984), Pune.
3. The Quest for the Gitakara : Multiple authorship revisited – by Robert N. Minor, Published in the Annals of BORI , Pune, 1983.
4. (क) Quest for the Original Gita, G. S. Khair, Somaiya Publications, Bombay, 1969, (ख) GITA – My research & Interpretation by G.S. Khair, Pub. Harold Laski Institute of Political Science, Ed. G.V. Mavalankar, Ahmedabad,1981
5. Great writers possess certain peculiarities and individualities in exposition, style and diction, which differentiate them from other writers. This criterion was applied in the case of the three

contributions to the Gita also. Ibid., p. 12.

6. In the middle or second sextet, all the references to God by Krishna are in the first person singular. They are not interrupted by the third person singular verses. But in the first and third sextet the majority of the third person verses are interspersed by the first person singular verses. This suggests that the first and third sextets are expanded by the author of the middle (second) sextet, who has composed his portion with the use of the first person pronouns. – Gita, My research & interpretation, G. S. Khair, p. 8
7. The third author (second sextet) shows no mercy to those who differ from him. He uses the most ruthless and powerful vocabulary in condemning them in such words as, नराधम, अल्पबुद्धि, नष्ट, विभ्रान्त, मदान्वित,आसुराः etc. – Gita – My research & Interpretation, G. S. Khair, Ahmedabad, p. 11
8. It seems to me to be evident from this that, owing to the intrusion of the vulgate into Kashmir, the Kashmirian recension of the Gita must have fallen into disuse there at about the time of the extinction of the Pratyabhijnaa school, say in the fourteenth century. –The Kashmir Recension of the Bhagavadgita, Ed. By F. Otto Schader, Kiel University, Germany, 1930.
10. भगवद्गीता शब्द से कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण के द्वारा, युद्ध से पहले, अर्जुन को सुनाई गई गीता की चर्चा अभीष्ट है। क्योंकि महाभारत में तो अन्य 16 गीताओं का भी पाठ मिलता है। जैसे कि- शिवगीता, अवधूत गीता, अष्टावक्र गीता इत्यादि । द्रष्टव्यः- गीतामहोदधिः, सं. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2018, इनके अलावा पुराणों में भी अनेक गीताएं प्राप्त होती हैं।।
11. जिज्ञासु के लिए द्रष्टव्यः- Who's Zoomin' Who ? Bhagavadgita Recension in India & Germany, International Journal of Dharma Studies, 2016, 4:4, pp. 1-41
12. Nourse printing press in Central London, 1785
13. With an introduction discussing the problem of the Kashmir Recension and Two appendices.
14. Bhagavad-Geeta of Bhagavan Sri Krishna and the Geetartha-sangraha of Maharshi Gobila, Ed. K. T. Sreenivasacharriar of

Madras, Pub. S'uddha Dharma Mandala of Mylapore, Madras, 1915.

सन्दर्भ ग्रन्थसूचि

1. भगवद्गीता की समीक्षितावृत्ति । सं. एस. के. बेलवालकर, बी.एच.-यू.-, वाराणसी, 1941
2. Bhagavad-Geeta of Bhagavan Sri Krishna and the Geetartha-sangraha of Maharshi Gobila, Ed. K. T. Sreenivasacharriar of Madras, Pub. S'uddha Dharma Mandala of Mylapore, Madras, 1915.
3. GITA – My research & Interpretation by G.S. Khair, Pub. Harold Laski Institute of Political Science, Ed. G.V. Mavalankar, Ahmedabad,1981
4. Quest for the Original Gita, G. S. Khair, Somaiya Publications, Bombay, 1969
5. The Kashmir Recension of the Bhagavadgita, Ed. By F. Otto Schader, Kiel University, Germany, 1930.
6. The Multiple authorship of the Mahabharata : A statistical approach by Dr. M.R. Yardi, Published in The Annals of BORI., (in 1977, 1978, 1982, 1983, 1984), Pune.
7. The Quest for the Gitakara : Multiple authorship revisited – by Robert N. Minor, Published in the Annals of BORI , Pune, 1983.
8. Who's Zoomin' Who ? Bhagavadgita Recension in India & Germany, International Journal of Dharma Studies, 2016

❋ ❋ ❋